‘इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में युवा-विमर्श
(जयनंदन एवं ऋषिकेश सुलभ की कहानियों के विशेष संदर्भ में)’

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ० गजेन्द्र भारद्वाज
सहायक प्राचार्य, हिन्दी-विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

पवन जी झा
पिता– हरेराम झा
ग्राम– कविलपुर, पो०- लहेरियासराय
थाना- बहादुरपुर, जिला- दरभंगा।
पैट क्रमांक– E2209024

‘इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में युवा-विमर्श
(जयनंदन एवं ऋषिकेश सुलभ की कहानियों के विशेष संदर्भ में)’

प्रस्तावित शोध विषय की भूमिका-

इक्कीसवीं सदी का भारत निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर होकर नित नये क्षितिजों को स्पर्श कर रहा है। हमारा देश सन् 2047 तक विकसित भारत की कल्पना को साकार करने के लिए प्रत्येक भारतीय प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने हेतु संकल्पित है। विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी के कारण इस संकल्प की पूर्ति में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका युवाओं की हो जाती है। जिसके लिए युवाओं को वैज्ञानिक, तकनीकी एवं सूचना क्रांति के ज्ञानार्जन के लिए अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। युवाओं में इसके लिए उत्साह भी दिखाई देता है लेकिन युवाओं की एक बहुत बड़ी आबादी ऐसी भी है जो नशो की लत, मोबाइल, इण्टरनेट तथा सोशल मीडिया की लत, पलायनवादिता, आत्महत्या, निराशा, कुंठा जैसी समस्याओं से जूझ रही है। हालाँकि ऐसे युवाओं को इन समस्याओं से बचाने के लिए कई शासकीय एवं गैर-शासकीय संगठनों एवं द्वारा कई शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक प्रयास किए जा रहे हैं पर प्रथमदृष्टया ये प्रयास अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हैं। प्रयासों में सफलता की आशा से समाज की औपचारिक एवं अनौपचारिक संस्थाओं के द्वारा भी इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन परिणामों में कोई अंतर दिखलाई नहीं देता।

ऐसी स्थिति में स्त्री विमर्श की सफलता से उत्साहित हिंदी के साहित्यकारों द्वारा विभिन्न वर्गों के इन युवाओं के हितार्थ विभिन्न विमर्शों का दौर प्रारंभ कर दिया गया। प्रारंभिक अवस्था में इन विमर्शों को साहित्य के कथ्य का केन्द्र अस्तित्व के संकट की पहचान के समय बनाया गया जो अस्मिता से जुड़कर मानव विमर्श की दिशा में स्त्री, दलित, आदिवासी, बाल, वृद्ध, कृषक, मजदूर, प्रवासी, अल्पसंख्यक, दिव्यांग, किन्नर, समलैंगिक, लेस्बियन, गे आदि विमर्शों के रूप में विविध साहित्यिक विधाओं में विस्तार पाता चला गया, और जिसके कथ्य का केन्द्र मानवेतर आयाम रहे वह सभ्यता, संस्कृति, भाषा, मीडिया, रंग, पर्यावरण, आदि विमर्श के रूप में ढलता चला गया। इन प्रयासों द्वारा दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श को समझने की प्रक्रिया आज भी जारी ही है इसी बीच बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, कृषक विमर्श, एल.जी.बी.टी. विमर्श आदि की ऐसी बाढ़ आ गई, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी विमर्श किसी-न-किसी रूप में

एक-दूसरे के प्रति पूरकता या सम्बद्धता प्रदर्शित करते हैं। इस पूरकता या संबद्धता का केन्द्र 'युवा-विमर्श' को माना जा सकता है। 'युवा-विमर्श' का अर्थ युवाओं से जुड़ी उन समस्याओं पर किए जाने वाले उस विमर्श से लगाया जा सकता है जिनका प्रत्यक्ष संबंध युवाओं के हितार्थ किए गए ऐसे चिंतन या परिचर्चा से होता है जिसमें युवाओं से जुड़ी उन सभी बातों पर गंभीर विचार करते हुए विमर्श-परामर्श किया जाता है जिनका संबंध युवाओं के वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास से होता है। विद्वानों द्वारा जिस प्रकार विमर्श का अर्थ तथ्य-मीमांसा, गुण-दोष विवेचन, जाँच-परख से लगाया जाता है उसके आलोक में यह कहा जा सकता है कि 'युवा-विमर्श' के अतर्गत युवाओं के अधिकार-पहचान, अस्तित्व, आदि से जुड़े मुद्दों के समाधान पर निरंतर बात की जाती है।

हिंदी कहानी भी युवा-विमर्श के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में युवाओं के प्रति जागरुकता का प्रयास कर रही है। इस प्रयास में सफलता भी मिलती दिखाई दे रही है। हिंदी कहानी के युवा लेखक हों या पाठक सभी जागरुक हो रहे हैं। परंतु विविध विमर्शों के द्वारा युवाओं की समस्याओं पर से ध्यान का भटकाव भी हो रहा है। ध्यातव्य है कि अन्य विमर्शों के केन्द्र और परिधि येन-केन-प्रकारेण युवाओं से ही आकर संबद्ध हो जाती है। इसलिए यदि युवाओं को विविध विमर्शों में बाँटकर या वर्गीकृत किया जाएगा तो ऐसे प्रयासों का प्रतिफल भी टुकड़ों में ही प्राप्त होगा। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि पहले 'युवा-विमर्श' पर सही तरीके से ध्यान केन्द्रित किया जाए; हम देखेंगे कि आधे से ज्यादा विमर्शों का काम स्वयमेव ही पूर्ण होता चला जाएगा। इक्कीसवीं सदी के विविध विमर्शों के रूप में अधिव्याप्त हिंदी कहानी प्रत्यक्ष रूप से अपनी पूरी प्रखरता के साथ युवा-विमर्श की वकालत करती है, बस आवश्कता है तो इन विमर्शों से 'युवा-विमर्श' के नवनीता को मथकर निकालने की। प्रस्तावित शोध विषय के द्वारा इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में युवा-विमर्श के ऐसे ही तत्त्वों की पहचान एवं उनका अध्ययन-विश्लेषण का प्रयास किया जाएगा जिसके माध्यम से विभिन्न विमर्शों के द्वारा अभिव्यक्त युवाओं के संकटों, चिंताओं, समस्याओं आदि की अभिव्यक्ति के प्रयास एवं उनके समाधान की प्रस्तावना की गई है। इक्कीसवीं सदी की अनेक हिंदी कहानियों में युवाओं के शारीरिक-मानसिक सीमाओं संबंधी बंधनों की पड़ताल, इन बंधनों से मुक्ति की जिज्ञासा के लिए युवाओं द्वारा उठाए गए कदम, सार्थक या निरर्थक मुद्दों के माध्यम से खुशी तलाशते युवाओं की सहज क्रियाशीलता, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा, सफलता आदि सभी का चित्रण, चिंतन, विमर्श और संभावित समाधानों पर बात की जा रही है।

वैसे तो बीसवीं सदी के विभिन्न दशकों की कहानियों में स्वानुभूतिजन्य विषयवस्तु के आलोक में युवा पात्रों को अपने-अपने समय में गुलामी, समाज सुधार, आजादी की लड़ाई, आंदोलन, विश्वयुद्ध, स्वतत्रता, अकाल, युद्ध, आपातकाल, भूमंडलीकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण, तकनीकी विकास आदि से प्रभावित दिखाया गया। फिर भी समकालीन कहानी के दौर से सक्रिय पिछली पीढ़ी के कहानीकारों की कहानियों में दूधनाथ सिंह का कहानी संग्रह ‘धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे’ (2002) ‘निष्कासन’ (2002), उदयप्रकाश का ‘पीली छतरी वाली लड़की’ (2001), ‘दत्तात्रेय का दुःख’ (2002), फैंटेसी, प्रियंवद का ‘फाल्गुन की एक उपकथा’ (2003), वीरेन्द्र सक्सेना का ‘इक दूजे के लिए नहीं’ (2004), ओमप्रकाश वाल्मीकि का ‘घुसपैठिये’ (2003), मनोज सोनकर का ‘हलफनामा’ (2002), ‘पोस्टर्स’ (2004), अरुण प्रकाश का ‘विषम राग’ (2003), ‘जलउमरुमध्य’ (अखिलेश), ‘तिरिया चरतिर’ (शिवमूर्ति), ‘पाँव तले की दूब’ (संजीव), ‘भैय्या एक्सप्रेस’ (अरुण प्रकाश), ‘बलि’ (स्वयं प्रकाश) और ‘अगले अंधेरे तक’ (जितेन्द्र भाटिया), महिला कहानीकारों में ममता कालिया का ‘मुखौटा’ (2003), ‘निर्मोही’ (2004), मृदुला गर्ग का ‘संगति-विसंगति’ (2004), चित्रा मुद्गल का ‘लपटें’ (2002), ‘बयान’ (2004), सुधा अरोड़ा का ‘काला शुक्रवार’ (2004), ‘रहोगी तुम वही’ (2007), ‘सूर्यबाला का ‘गृहप्रवेश’ (2010), ‘काँसे का गिलास’ (2004), मालती जोशी का ‘पूजा के फूल’ (2011), ‘वो तेरा घर ये मेरा घर’ (2012), ‘बाबुल का घर’ (2014), ‘ऑनर किलिंग’ (2015), नासिरा शर्मा का ‘इनसानी नस्ल’ (2001), ‘बुतखाना’ (2008), अलगा सरावगी का ‘दूसरी कहानी’ (2010), राजी सेठ का ‘स्त्री हूँ इसलिए’ (2015) आदि का प्रकाशन हुआ जिनमें युवा-विमर्श के विभिन्न मुद्दों पर बात कई गई है।

21वीं सदी में सक्रिय पुरानी पीढ़ी के इन कहानीकारों की कहानियों के युवा पात्रों में आज भी ये विषय पूरी गंभीरता के साथ प्रस्तुत होते हैं, तथापि 21वीं सदी के युवा कहानीकारों की कहानियों में इक्कीसवीं सदी की युवा-जनित समस्याओं के चित्रण और उनके समाधान के प्रति अधिक सक्रियता है। इन युवा कहानीकारों की कहानियों में कई युवा पात्र ऐसे मिल जाएँगे जिनकी न तो इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण कालखण्डों के प्रति कोई संवेदना है और न ही इसकी जानकारी के प्रति कोई रुचि। देश, समाज, परिवार की प्रगति और विकास से बेखबर ये युवा पात्र सूचना-प्रौद्योगिकी के अविष्कारों के बीच पल-बढ़कर इण्टरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग आदि को ही अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग मानकर बैठा है जिसके कारण उसका

जीवन इन्हीं तकनीकों से प्रेरित, प्रभावित तथा संचालित हो रही है। आज तकनीकी शिक्षा की से संपन्न सुविधाओं से सजे कैंपस उपलब्ध होने पर भी युवाओं में गहरा असंतोष है। ड्रग्स, अजनबीपन, अलगाव, सेक्स, हिंसा, मशीनीकरण, अराजकता, आत्महीनता की स्थिति का सामना आजा का प्रत्येक युवा किसी न किसी स्तर पर कर रहा है। जनसंख्या विस्फोट, भूमण्डलीकरण, सूचना क्रांति, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, मीडिया के विस्तार से प्रभावित युवा के सामने रोजगार का संकट है जिससे जूझने के लिए विभिन्न प्रकार के कौशल विकास, उद्यमिता, तकनीकी दक्षता आदि के प्रयास शासन की ओर से किए जा रहे हैं। आज की कहानियों के युवा पात्रों में इन उद्यमों का प्रभाव भी परिलक्षित होता है।

बीसवीं सदी की कहानियों में दबे-छुपे अपनी उपस्थिति दर्ज कराती सांप्रदयिकता और उसका विरोध, दोनों ही 21वीं सदी की कई कहानियों में प्रखर रूप में प्रकट होता हुआ देखा जा सकता है। ऋत्विक दास मिश्र की कहानी 'कुम्हड़े की माँ', शशिभूषण द्विवेदी की 'शिल्पहीन', वंदना राग की 'यूटोपिया', मो. आरिफ की 'चोर-सिपाही', विमल चंद पाण्डेय की 'सोमनाथ का टाइम-टेबिल', अल्पना मिश्र की कहानी 'भीतर का वक्त' जैसी कहानियों में सांप्रदायिकता से उपजे हिंदू-मुस्लिम युवा पात्रों की वैमनस्यता उनके सामाजिक-सांस्कृतिक अलगाव का प्रमाण प्रस्तुत तो किया ही गया है, इस वैमनस्यता के पीछे छिपी राजनीतिक तथा आर्थिक महत्त्वाकांक्षाओं का पर्दाफाश करने का भी प्रयास किया गया है। वास्तव में बीसवीं सदी का अंतिम दशक राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असंतुलन, वैचारिक विसंगतियों, क्षेत्रवाद आदि से गहराई से प्रभावित दिखा है। युवा कहानीकार प्रभात रंजन की कहानी 'जानकीपुल' में वैज्ञानिक-तकनीकी विकास से उपजे इण्टरनेट और मोबाइल के अतिरेकी उपयोग के संकट के साथ युवाओं के प्रति उदासीन होते हुक्मरानों की मानसिकता को बताया गया है। कहानी में लोग विदेश बैठे लोगों को तो इंटरनेट या मोबाइल के माध्यम से चंद सेकेण्डों में अपने से जोड़ लेते हैं लेकिन बीस वर्ष का समय बीत जाने पर भी ग्रामीण क्षेत्र को पुल के माध्यम से शहर, लोगों और विकास से नहीं जोड़ पाते। इसी प्रकार प्रत्यक्षा की कहानी 'जंगल का जादू तिल-तिल' ऐसे यथार्थ को व्यक्त करती है जिसमें आदिवासी और युवाओं के माध्यम से जन-विकास की कलई खोलते उन सभी दावों से पर्दा उठाया गया है जो विकास-मॉडल के नाम पर पूँजीपतियों के मुनाफ़े को केन्द्र में रखकर किए जाते हैं। शशि भूषण द्विवेदी की 'विप्लव' और चंदन पाण्डेय की 'भूलना' आदि कहानियों को भी औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक विकास, पर्यावरण संकट, मोबाइल की लत, भूमंडलीकरण, बाजारवाद आदि

संदर्भों में देखा जा सकता है जिनमें युवा वर्ग की विडंबनाओं और मन में पल रहे संत्रास को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

युवाओं में सर्वाधिक आकर्षण की संवेदना प्रेम की मानी जाती है। 21 वीं सदी की कहानियों 'पीली छतरी वाली लड़की' (उदय प्रकाश), 'मुक्ति-प्रसंग' (अल्पना मिश्र), 'कठपुतलियों' (मनीषा कुलश्रेष्ठ), 'रोमियो, जूलियर और अंधेरा' (कुणाल सिंह), 'चोर-सिपाही' (मो. आरिफ), 'सत्ताइस साल की सांवाली लड़की' (दीपक श्रीवास्तव), 'शहादत और अतिक्रमण' (वंदना राग), 'पापा, तुम्हारे भाई' (शिल्पी), 'बाकी धुआँ रहने दिया' (राकेश मिश्र), 'दिल नवाज, तुम बहुत अच्छी हो', 'फुलबरिया मिसराइन' (प्रत्यक्षा), 'बोध' (पराग कुमार मांदले) आदि में प्रेम के प्रति युवाओं की संवेदनाओं को विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसी संवेदना का एक भाव सौंदर्य के प्रति जागरुकता भी है जो इन कहानियों में मिलती है। कई ऐसे युवा पात्र (युवक-युवती) इन कहानियों में हैं जो फिल्म या सोशल-मीडिया या सौंदर्य प्रतियोगिताओं के आकर्षण से प्रभावित हो जाते हैं, लेकिन अपने आत्मविश्वास के बूते स्वयं के कदमों को बहकने से बचा लेते हैं, तो कई ऐसे भी हैं, जो अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाते और भावनाओं के ज्वार में बह जाते हैं।

21वीं सदी में हिंदी कहानी में यह भी दिखाई देता है कि युवाओं में उबल रहा प्रेम का ज्वार किस प्रकार धर्म, जाति, समाज, देश आदि की घोषित सीमाओं का अतिक्रमण कर जाता है। एलजीबीटी संबंधी कहानियों में समलैंगिक, किन्नर, लेस्बियन, गे, उभयलिंगी, समलिंगी, विषमलिंगी, अलिंगी, नपुंसक जैसे समाजिक परित्यक्तता, तिरस्कार, उपेक्षा और बहिष्कार झेल रहे युवाओं की समस्याओं के साथ-साथ उनके मूलभूत अधिकारों, जीवनयापन तथा सम्मान के पक्ष में आवाज उठाते हुए उनकी लिंगबोधक अस्मिताओं के गहरे सत्य से रूबरू कराते हुए उनसे संबंधित विभिन्न मुद्दों को उठाकर नई दृष्टि से देखने का प्रयास किया जा रहा है। इन विषयवस्तु में युवाओं ऐसी परेशानियों को रेखांकित करने का प्रयास मिल रहा है, जिनपर स्वयं युवा या समाज के अन्य सदस्य पिछली सदी के अंतिम दशक तक खुलकर बात करने से परहेज किया करते थे। योगिता यादव, शहादत खान, जैसे कहानीकारों ने इन मुद्दों पर युवाओं की समस्याओं को बहुत संजीदगी से रखने का प्रयास किया है। आकांक्षा पारे की कहानी 'सखी-साजन' (2014), रश्मि शर्मा की कहानी छपी 'बंद कोठरी का दरवाज़ा' (2018), मधु कांकरिया की 'लाड़ो' (2019), किंशुक गुप्ता की 'मछली के कांटे'

(2022), शुभम नेगी की 'परछाई' (2022), मिथिलेश प्रियदर्शी की 'रकीब' (2022), किरण सिंह की 'संझा' आदि आदि कहानियों के युवा पात्रों को इस विषय की समस्याओं से जूझते और सफल होते भी दिखाया गया है। गौरव सोलंकी के कहानी संग्रह 'ग्यारहवीं-ए के लड़के' में संकलित कहानियों 'सुधा कहाँ है', 'ब्लू फिल्म', 'तुम्हारी बाँहों में मछलियाँ क्यों नहीं हैं', 'पतंग', 'यहाँ वहाँ कहाँ' आदि में युवाओं के मन में चल रहे सामाजिक नैतिक मूल्यों बनाम भावनात्मक अंर्तद्वंद्व के संघर्ष को यौनसंवेदनाओं के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया गया है। इस आत्मसंघर्ष के फलस्वरूप आज के युवाओं में बढ़ती हिंसक मानसिकता, क्षेत्रवाद, देहाकर्षण, अश्लीलता की प्रवृत्ति को बतलाने का प्रयास किया गया है।

पारिवारिक विघटन और दहेज प्रथा जैसी बुराइयाँयुवाओं को सर्वाधिक प्रभावित करती है। आज के सामाजिक-सांस्कृतिक संक्रमण से जूझ रहे भारतीय समाज की बुनावट बदल रही है, संबंध बिखर रहे हैं। मूल्यों में गिरावट के कारण सामाजिक संबंध अस्थिर, अनुपयोगी तथा औपचारिक माना जाने लगा है। जिसके कारण पारिवारिक स्नेह अहम् के कुठाराघात से विकृति की ओर गतिमान हो गया है। परिवार के सदस्यों में भावनात्मक जुड़ाव नैसर्गिक न होकर क्रत्रिम होने लगे हैं, जिनकी व्याप्ति आज केवल औपचारिक संबंधो के निर्वहन तक मान ली जाती है। भीड़ में अकेलेपन की उक्ति चरितार्थ होने लगी है। पीढ़ी दर पीढ़ी नैतिकता के मापदंड शिथिल होते चले जा रहे हैं जिसके कारण स्त्री-पुरुष संबंध संघर्ष का रूप लेता जा रहा है। 'एक थी सांवली' (संगीता आनन्द), 'एक नई शुरूआत' (डॉ. सरला अग्रवाल), 'बबली तुम कहाँ हो' (डॉ. अलका पाठक), 'वैधव्य नहीं बिकेगा' (पं. उमाशंकर दीक्षित), 'बरखा की विदाई' (डॉ. कमल कपूर), 'सांसों का तार' (डॉ. उषा यादव), 'अंतहीन घाटियों से दूर' (डॉ. सतीश दुबे), 'आप ऐसे नहीं हो' (श्रीमती मालती बसंत), 'बिना दुल्हन लौटी बारात' (सन्तोष कुमार सिंह), 'शुभकामनाओं का महल' (डॉ. उर्मिकृष्ण), 'भैयाजी का आदर्श' (महेश सक्सेना), 'निरर्थक' (श्रीमती गिरिजा कुलश्रेष्ठ), 'अभिमन्यु की हत्या' (कालीचरण प्रेमी), 'संकल्प' (श्रीमती मीरा शलभ), 'दूसरा पहलू' (श्रीमती पुष्पा रघु), 'वो जल रही थी' (अनिल सक्सेना चौधरी), 'बेटे की खुशी' (डॉ. राजेन्द्र परदेशी), 'प्रश्न से परे' (विलास विहारी) आदि कहानियों के माध्यम से पारिवारिक विघटन और दहेज प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों का युवाओ पर पड़ते विपरीत प्रभावों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया गया है।

इक्कीसवीं सदी के अन्य कहानीकारों में प्रेम भारद्वाज के कहानी संग्रह 'इंतजार पाँचवे सपने का' (2012), 'फोटो अंकल' में प्रेम और संवेदना से भरी छटपटाहट और समाज के अंतर्विरोधों को युवा दृष्टिकोण

से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है तो रविंद्र आरोही की कहानी 'जादू : एक हंसी, एक हिरोइन' (2007) तथा 'बारिश की रात, छुट्टी की रात' (2013), राजकुमार राकेश की कहानी 'कैंसर वार्ड' में संकलित कहानियों में युवाओं में व्याप्त उदासी. बिखराव, नैराश्य, पीड़ाओं आदि के हवाले से युवा विमर्श का चित्रण किया है। योगेंद्र आहूजा की कहानी 'लफ्फाज़', पल्लवी प्रसाद की कहानियों में 'मोहल्ला और मास्टरजी' (2013), 'बादशाह नहीं, मैं औरंगजेब!' (2013) मध्यमवर्ग की दैनंदिन समस्याओं से जूझते युवा का चित्रण किया गया है। कैलाश बनवासी की कहानी 'बाजार में रामधन' में उदारीकरण और भूमंडलीकरण, किसान विमर्श, मजदूर विमर्श के सूत्र मिलते हैं तो उपासना की 'कैनवास की लकीरें' (2008), 'एगही सजनवा बिन ए राम!' (2013) में युवाओं के जीवन में व्याप्त एब्सर्डता, तल्खियाँ, भदेस और जीवन की कठिनाइयाँ विषय बनकर आई हैं। शशिभूषण द्विवेदी का कहानी संग्रह 'कुछ और नहीं', सत्यनारायण पटेल का 'तीतर फांद', दुर्गेश सिंह के 'जहाज' (2010), 'हटिया एक्सप्रेस का डिपार्चर', 'खदेरूगंज का रूमांटिक ड्रामा', 'स्टे ऑर्डर' 'चियर्स धर्मराज' जैसी कहानियों में उदारीकरण के मार्फ़त युवाओं में हुए व्यवहार परिवर्तन को व्यापक फलक पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। शिवेंद्र 'ए घुटरु! कहनी कहो न...' (2013), 'चांदी चोंच मढ़ाएब कागा उर्फ चॉकलेट फ्रेंड्स' (2013) विस्थान के प्रभावों की ओर युवाओं का ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया है।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी के आरंभ के साथ हिन्दी कहानी की नयी युवा पीढ़ी की कहानियाँ युवा-विमर्श के विभिन्न आयामों पर लेखन कर रहे हैं। इन कहानीकारों में जयनंदन, प्रियंवद, ऋषिकेश सुलभ, जितेन्द्र भाटिया, संजय खाती, हरि भटनागर, कैलाश बनवासी जैसे कहानीकारों के कथ्य को आज के युवा कहानीकार शामिल हैं जो अपने युवा पात्रों की चिताओं, जीवन पद्धतियों, संत्रास, उमंगों आदि के माध्यम से आगे लेकर जा रहे हैं। संतोष इस बात का है कि नई पीढ़ी की कहानियाँ संकीर्णताओं से स्वतंत्र होकर लिखने का प्रयास कर रहे हैं। इन्हें देखकर कहा जा सकता है कि आदर्श से यथार्थ की यात्रा की जो कहानी प्रेमचंदयुग में प्रारंभ हुई थी वह 21वीं सदी में भी कहानियों का का आकर्षण बनी हुई है। 'रेखाचित्र में धोखे की भूमिका' (चंदन पाण्डेय), 'रोमियो जूलियर और अंधेरा' (कुणाल सिंह), 'बाकी धुआँ रहने दिया' (राकेश मिश्र), 'लापता नत्थू उर्फ दुनिया न माने' (रवि बुले), 'दद्दा यानि मदर इंडिया का सुनील दत्त'(उमाशंकर चौधरी) जैसी कहानियों में इसी वैचारिकी को युवा दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास भी हो

रहा है। अपने युग के वास्तविक यथार्थ से अनभिज्ञ युवा मन जब अपनी सुविधासंपन्न दुनिया से बाहर निकलने को होता है तो उसके हृदय में अपने भावी जीवन के अनदेखे-अनजाने दिवा-स्वप्न तैर रहे होते हैं। इन स्वप्नों की भेंट जब व्यवहारिक-विश्व से होती है तो उसका प्रभाव युवा मन पर जिस प्रकार पड़ता है, उसकी झाँकी 'परिंदगी है कि नाकामयाब है' (चंदन पाण्डेय), 'सनातन बाबू का दांपत्य' (कुणाल सिंह),'क्वालिटी लाइफ'(शिल्पी) जैसी कहानियों के युवा पात्रों में दिखाई देती है।

सर्वविदित कहानीकार जयनंदन के अतिथि-संपादन में हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका 'प्रगतिशील वसुधा' के 79 और 80 वें अंक के 'समकालीन विशेषांक 1 और 2' में 21वीं सदी की कुछ आरंभिक कहानियों पर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। जिसमें संपादक ने बताने का प्रयास किया है कि युवाओं को लेकर यह समय समस्याओं का रोना रोने का नहीं बल्कि उनके चित्रण-विश्लेषण और समाधान के विमर्श का है। गरीबी, मँहगाई, बेरोजगारी, रिश्वत, भ्रष्टाचार, शोषण, अत्याचार, अपहरण, बलात्कार, सांप्रदायिकता जैसे मुद्दों पर आज का कहानीकार मुखर होकर लिखता है। इसलिए 21वीं सदी की कहानियों का कैनवास बहुत विस्तृत है। आज का कहानीकार प्रवासी, आदिवासी, दलित, अल्पसंख्यक, स्त्री, हाशिये, कृषक आदि में बंधकर नहीं लिखता बल्कि साहित्यिक वर्जनाओं को तोड़ते हुए शिक्षा, रोजगार, संबंध, वातावरण आदि से जुड़े युवाओं के विविध पक्षों का उद्घाटन कर रहे हैं। आज का कहानीकार युवाओं को वर्गों के दायरे से ऊपर उठकर 'युवा-विमर्श' के दायरे में देखना चाहता है। प्रभात रंजन, उमाशंकर चौधरी, कैलाश बनवासी, विमल चंद्र पांडेय, रबि बुले, मोहम्मद आरिफ, चंदन पांडेय, कुणाल सिंह, मनोज कुमार पांडेय, अनिल यादव जैसे 21वीं सदी के कहानीकारों में बड़ी संख्या में मनीषा कुलश्रेष्ठ, प्रत्यक्षा, नीलाक्षी सिंह, कविता, अल्पना मिश्र आदि ऐसी महिला कथाकारों का नाम भी लिया जा सकता है जिन्होंनेस्त्री विमर्श को देह से मुक्त करने में सफलता प्राप्त कर ली है और वे अपनी मुक्ति को समाज की मुक्ति के साथ जोड़कर देखती हैं। जयनंदन की 'भितरघात' जैसी कहानियों में युवा पात्रों के माध्यम से संस्कृति के अवमूल्यन, अपसंस्कृति, सांस्कृतिक अंतर्विरोध आदि का टकराव, उद्विग्नता, नैतिक मूल्यों में गिरावट जैसे प्रसंगों को केन्द्र में लाने का प्रयास मिलता है। ऋषिकेश सुलभ की कहानी 'वसंत के हत्यारे' में फैशन के आकर्षकण से आकर्षित युवती अपना कैरियर बनाने में सफल होती है तो वहीं उसके प्रेम में पड़ा युवक अपना कैरियर तबाह कर लेता है।

प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता-

शिक्षा के दौरान कई युवा साथियों के व्यवहार एवं जीवन-पद्धति में आए बदलाव ने संवेदनशील युवा होने के नाते मुझे प्रभावित एवं जागरुक किया है कि मुझे अपने परिवार के प्रति निर्वहन की जाने वाली जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए अपने अभिभावकों द्वारा देखे गए संतति के खुशहाल जीवन के स्वप्न को साकार करना है। साथ ही बाल्यावथा में हिंदी कहानियों ने मुझे जीवन के प्रति दृष्टिकोण को समझने की दृष्टि से सदैव आकर्षित किया है। यही कारण है कि उच्च शिक्षा के क्रम में जब शोधकार्य हेतु आवेदन किया तब कहानी विधा का ही चयन करूँगा यह विचार दृढ़ हो गया। मेरे साथ-साथ युवा साथिओं की समस्याओं के प्रति उत्पन्न मेरी संवेदनशीलता ने मुझे कहानियों में युवाओं के मुद्दे तलाशने की प्रेरणा दी। पीएच.डी. की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत कोर्स वर्क के दौरान विद्वान साहित्यकार शिक्षकों ने जिस सद्भावनापूर्वक ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान किया उसी से यह भावना और भी बलवती होती चली गई कि साहित्यकार विद्वानों के विचार युवाओं की कई समस्याओं के सामधान का खोजने में सहायक हो सकते हैं। तब विद्वान शिक्षकों की प्रेरणा से इक्कसवीं सदी की हिंदी कहानियों में युवा-विमर्श पर शोधकार्य करने का प्रस्ताव तैयार किया जा सका। चूँकि जयनंदन और ऋषिकेश सुलभ जी की कुछ कहानियों ने मुझे आकर्षित किया, इसलिए इन दोनों कहानीकारों की कहानियों के विशेष संदर्भों को लेकर युवा-विमर्श के आयामों की तलाश के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

जीवन की सर्वाधिक अस्थिर अवस्था में होने के कारण युवा मानसिक और भावात्मक रूप से स्थिर नहीं रह पाते। उनकी जिज्ञासाओं, उत्साह, संशयों, कुंठाओं के निराकरण के लिए पूरे समाज को आगे आना होगा। लेकिन आज भी समाज के वरिष्ठ नागरिक स्वयं की युवावस्थाओं के अच्छे-बुरे अनुभवों के आधार पर ही अपने घरों के युवाओं को देखते हैं। बिना इस बात की पूरी तसल्ली किए कि यह बहुधा संभव है कि जो उस समय में उचित रहा होगा, आज या तो अनुचित हो सकता है, अनुपयोगी हो सकता है या अपर्याप्त हो सकता है। युवाओं का सच्चा साथी बने बिना उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने मन की बात यथातथ्य बताएँ। यह युवाओं के लिए हर समय में कठिन ही रहा है। ऐसे में युवाओं के दृष्टिकोण को समझते हुए उनको निरपेक्ष दृष्टि से वस्तुपरक और बौद्धिक मार्गदर्शन प्रदान करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है जिसके लिए आवश्यक है युवा-विमर्श। आज आवश्कता इस बात की है कि युवा-विमर्श से युवाओं की दुविधाओं का शमन, रचनात्मक सक्रियता में वृद्धि, आत्मानुशासन, स्वाबलंबिता, आत्मनिर्भरता, सकारात्मकता, प्रतिबद्धता आदि की भावना का विकास किया जाए, जिससे उनमें नेतृत्व-क्षमता, देशभक्ति, सहानुभूति,

सहभागिता, समन्वय जैसे महत्त्वपूर्ण गुणों और विशेषताओं का विकास हो सके और उनका चरित्र निर्माण हो सके। इसके लिए एक ऐसे मंच की आवश्यकता है जिसके माध्यम से युवा वैचारिक आदान-प्रदान कर सकें। ऐसे व्यवहारिक मंचों का अभाव आज के युवा को घुटन और संत्रास की दिशा में धकेल रहा है जिससे बचने और अपनी जिज्ञासाओं के समाधान के लिए युवा मोबाइल और इंटरनेट की उस वर्चुअल दुनिया में गुम होता चला जा रहा है जहाँ उसे शारीरिक व्याधियों और मानसिक अवसाद के अतिरिक्त कुछ नहीं मिल सकता। ऐसी स्थिति में युवा-विमर्श युवाओं की भटकन को एक सही दिशा देने का सशक्त माध्यम बन सकता है।

21वीं सदी की हिंदी कहानी युवाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करती है, जिसकी आवश्यकता प्रत्येक युवा अपनी जिज्ञासाओं के समाधान के लिए महसूस करता है। धर्म-परिवर्तन, घरेलू हिंसा, नैतिक मूल्यों का ह्रस, आत्महत्या, डिग्री प्राप्त करने की अंधी दौड़ से परेशान जैसी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, समाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं से ऊबकर युवा वर्ग आज ज्ञानार्जन के महत्त्व को समझने लगा है जिसके कारण वह ग्रंथों के अध्ययन की ओर उन्मुख हो रहा है। ग्रंथों में अनुभवजन्य ज्ञान के महत्त्व को आत्मसात् कर रहा है, अनुभव की प्राप्ति हेतु खतरे उठाने से भयभीत समाज के सदस्यां की पूर्वनिर्धारित परिपाटी का अनुगामी बनने में विद्रोह व्यक्त करता आज का युवा तब तक सही मार्ग से वंचित रहेगा जब तक कि यह समाज इन खतरों का सामना करने की अनुमति देने के लिए स्वयं को मानसिक रूप से तैयार न कर ले। जिस दिन हमारा समाज इसके लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाएगा। उसी दिन विमर्शों को सही परिपाटी मिल पाएगी।

21वीं सदी की हिंदी कहानियों में युवाओं के इन्हीं मानसिक द्वंद्व, चिंता, आक्रामकता, व्यामोह, मनोविकृतियों, खोखलेपन, वितृष्णा, व्यसनाधीनता आदि को विषय बनाकर प्रस्तुत किया गया है। 21वीं सदी की युवा कहानियों में नवचेतना का आग्रह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। देखा जा सकता है कि सांस्कृतिक, राजनैतिक उपेक्षा एवं तिरस्कार का शिकार तथा समाज व परिवार के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा युवाओं की भावनाओं का अनादर और उपेक्षा जिस तरह उनका नजरिया और मूल्यों को नकारात्मक रूप से बदल देता है जो उनके आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता में कमी लाकर युवाओं को कुंठित कर असुरक्षा, भय, चिंता, आशंका, अनिश्चितता और अकेलेपन से भर देती है। इन्हीं कमियों का फायदा उठाकर युवाओं को आतंकवाद, क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता आदि के चंगुल में फँसा लिया जाता है। चंदन पांडेय की कहानी 'भूलना' आतंकवाद और प्रशासन के दमन की पृष्ठभूमि से उत्पन्न संकटों में फँसे युवाओं से परिचित कराती है। योगेन्द्र आहूजा के पास 'अंधेरे में हंसी' और मनोज रूपड़ा के पास 'साज़ नासाज' सामाजिक यथार्थ से हमें रू-ब-रू

कराती हैं। एस आर हरनोट की ‘आभी’, तरुण भटनागर की ‘प्रलय में नाव’, मनोज कुमार पांडेय की ‘पानी’, सत्यनारायण पटेल की ‘तीतरफांद’ आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। जिनमें आतंकावाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषायी विभाजन, जातिवाद आदि से युवाओं को होने वाले खतरे, चुनौतियों आदि की ओर ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया गया है। आतंकवाद के साइबर आतंकवाद, नक्सलवाद, जैविक आतंकवाद, विभिन्न रूपों के चंगुल में फँसे युवा की समस्याओं तथा उनके समाधान की पड़ताल करती 21वीं सदी की हिंदी कहानियों में युवा-विमर्श का यह एक नया आयाम है। इन आयामों का प्रखर चित्रण कहानीकार जयनंदन तथा ऋषिकेश सुलभ की कहानियों में स्वष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। अतः आज ‘युवा-विमर्श’ के विविध आयामों को परिभाषित करते हुए ऐसे शोध की आवश्यकता है जिससे शासन, समाज, मीडिया और स्वयं युवाओं की समस्याओं, जिज्ञासाओं, परेशानियों के प्रत्यक्ष-परोक्ष सभी रूपों को जाना-समझा जा सके। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु प्रस्तावित शोध विषय महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

प्रस्तावित शोध विषय का महत्त्व-

शारीरिक एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ युवा अतीत के अनुभव को भविष्य की संभावनाओं के साथ जोड़कर समाज व देश ओर समाज के विकास को सही दिशा और दशा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। विपरीत परिस्थितियों में अविचलित रहते हुए अपनी आत्मशक्ति के बल पर लक्ष्य की प्राप्ति का जो संदेश युवा-प्रतीक स्वामी विवेकानंद ने भारतीय युवाओं को दिया वह आज भी चेतनासंपन्न युवाओं को प्रेरित कर रहा है। यह सर्वविदित है कि युवावस्था में व्यक्ति ऊर्जा सम्पन्न होने के कारण उत्साहित और अत्यंत सक्रिय भी रहता है। युवाओं का यह उत्साह और सक्रियता दोनों ही उसके भावी जीवन उत्थान और पतन का मूल कारण भी होती है। जीवन की यथार्थता से दो-दो हाथ करते समय आने वाली अवसाद की स्थिति से लड़ने के लिए यदि युवा के पास अपने मूल्यों और संस्कारों की शक्ति न हो तो वह अपने लक्ष्य से भटक सकता है। इस भटकन के कारण उसका पूरा व्यक्तित्व भी प्रभावित होता है। हो सकता है कि युवा किसी नकारात्मक दिशा की ओर चल पड़े। अतः आवश्यकता है उसे सही-गलत के ुनाव हेतु उचित बौद्धिक सहायता प्रदान करने की, परंतु युवाओं को यह सहायता तभी दी जा सकती है जब उनकी आशाओं-अपेक्षाओं, जिज्ञासा-रोमांच, भय-शंकाओं, समस्या-परेशानियों, अंतर्द्वंद्वों आदि से भलिभाँति परिचित होकर

युवाओं के वैचारिक धरातल को सही तरीके से समझा जाए। युवाओं संबंधी इसी समझ को विकसित करने के लिए आज गहन विमर्श की आवश्यकता है।

इक्कीसवीं सदी की कहानियों के बरक्स ज्ञात होता है कि युवावस्था सर्वाधिक चुनौतीपुर्ण अवस्था है जिसमें बालमन के आदर्श और प्रौढ़पुरुष के कठोर यथार्थ के बीच के अस्थिर सूत पर संतुलन बनाता आज का युवा एक ओर अपने सुखी जीवन की सतरंगी कल्पनाओं को आँखों में लिए समाज में निकलता है तो आर्थिक मोर्चे पर सर्वप्रथम उसका सामना शिक्षा के व्यवसाय से होता है। उच्चशिक्षा के दौरान उसकी संगति उसके भविष्य की रूपरेखा तय करना प्रारंभ करती है। शिक्षा के उपरांत युवा का समाना नौकरी की वास्तविकता से जुड़े घोर यथार्थ से होता है। रोजगार प्राप्त करने में सफल युवाओं के जीवन की गति बेरोजगार युवाओं के जीवन की दिशा से भिन्न हो जाती है। अंतिम प्रयास में सफलता या असफलता से पूर्व युवाओं के जीवन की उथल-पुथल उनके व्यक्तित्व को स्थायी रूप से प्रभावित करती है। यही वह अवस्था है जब युवा मानसिक अवसाद, कुंठा, निराशा, आक्रोश, उपेक्षा, हीनभावना, यौनाकर्षण, धोखा जैसे शब्दों के वास्तविक यथार्थ का सामना करता है। जो युवा आत्मविश्वास, आत्मानुशासन, वैचारिक-क्षमता, धैय, संतुलन आदि की इन परीक्षाओं में सफल होता है वह अपने लक्ष्यों तथा महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करता हुआ परिवार तथा समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरता है और वे युवा जो अपनी व्यक्तिगत कमजोरियों के कारण इन चुनौतियों का सामना नहीं कर पाते वे अधीरता, भग्नाशा, व्यसन, आत्महत्या, अपराध, पलायनवृत्ति आदि में उलझकर रह जाते हैं। प्रस्तावित शोध विषय के माध्यम से युवाओं की इन समस्याओं के समाधान के विकल्पों की तलाश की जाएगी।

प्रस्तावित शोध विषय का परिसीमन-

प्रस्तावित शोध विषय की सार्थकता हेतु इसे सीमा इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों पर ही केन्द्रित रखा जाएगा। जिसमें इक्कीसवीं सदी के प्रथम एवं द्वितीय दशक की उन्हीं कहानियों को सम्मिलित किया जाएगा जिसमें युवा-विमर्श के आलोक में युवाओं की चिंताएँ का चित्रण है। तथापि कहानी संग्रहों और कहानियों के प्रकाशन के माध्यम भी आज बहुत विकसित हो गए हैं। अब पुस्तकों, पत्रिकाओं, बुकलेटा जैसे ऑफलाइन माध्यमों के साथ-साथ कहानी ऑनलाइन माध्यम से ब्लॉग, वेबपेज, पॉडकॉस्ट आदि द्वारा भी प्रकाशित होने लगी है। 21वीं सदी की इन कहानियों की भाषा, कथ्य और शिल्प पर इस तकनीकी परिवर्तन

का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। 21वीं सदी में लंबी कहानी, लघु कथा, वस्तुगत वैविध्यता कहानियों में आ रहे इस प्रकार के परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। 21वीं सदी के युवा कहानीकारों की कहानियों 'फूलों का बाड़ा' (मो. आरिफ), 'सौ किलो का साँप' (गीत चतुर्वेदी), 'रेखाचित्र में धोखे की भूमिका', 'शहर की खुदाई में क्या कुछ मिलेगा' (चंदन पाण्डेय), 'रोमियो, जूलियट और अंधेरा' (कुणालसिंह) 'यूटोपिया' (वंदना राग) आदि कहानियों के मार्फत इस अंदाज़ पर गौर किया जा सकता है।

पूर्वकृत शोध-

इक्कीसवीं सदी की कहानियों को लेकर निम्न शोधकार्य किए गए हैं-

- शोधार्थी- श्रीलता पी.वी, 'इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की लेखिकाओं की कहानियों में नारी यथार्थ', महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, 201
- शोधार्थी- गिरीश एन. बंजारा, '21वीं सदी की भारतीय दलित कहानियाँ एक तुलनात्मक अध्ययन', गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात, 2019
- शोधार्थी- श्रीमती संजीवनी संदीप पाटील, '21वीं सदी की महिला कहानीकारों की कहानियों में अंकित वृद्ध जीवन एक अनुशीलन: शशिप्रभा शास्त्री, मैत्रेयी पुष्पा, मालती जोशी, राजी सेठ, सुधा आरोड़ा, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा, अल्का सरावगी के विशेष संदर्भ में', सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे, 2020
- शोधार्थी- स्मृति कुमारी सिंह, '21वीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में व्यक्त प्रतिरोध: सुधा आरेड़ा, मधु कांकरिया, गीतांजलि श्री के विशेष संदर्भ में', श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई-20, 2020
- शोधार्थी- दीप्ति गिरहोत्रा, 'इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक दौर की हिंदी कहानियों का साहित्यिक अवदान चयनित महिला रचनाकारों के संदर्भ में', गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा(पंजाब), 2020
- शोधार्थी- उषा काशिनाथराव पाटील, '21वीं सदी की हिंदी कहानियों में व्यक्त नारी चेतना' स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड, 2021

- शोधार्थी- मनीषा श्रीराम चव्हाण, 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी महिला कहानीकारों की कहानियों में चिंतन के विविध आयाम सुशीला टाँकभौरे, एवं रोज केर्केता के विशेष संदर्भ में', डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, 2022

प्रस्तावित शोध विषय के आलोक में विभिन्न विश्वविद्यालयों में किए गए शोधकार्यों के अवलोकन के उपरांत प्रथमदृष्टया यह तथ्य परिलक्षित होता है कि इक्कीसवीं सदी की कहानियों में स्त्री विमर्श के प्रतिरोध, नारी चेतना, चिंतन के विविध आयाम, नारी यथार्थ, वृद्ध जीवन, आदिवासी दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन, दलित विमर्श, जैसे विविध पक्षों को लेकर कुछ विशेष साहित्यकारों के विशेष संदर्भ में तुलनात्मक एवं स्वतंत्र शोधकार्य अवश्य किए गए हैं लेकिन इक्कीसवीं सदी की कहानियों में युवा-विमर्श को लेकर कोई कार्य संपन्न या प्रकाशित नहीं हुआ है।

कहानीकार ऋषिकेश सुलभ की कहानी में युवा-विमर्श को लेकर अभी तक कोई भी प्रकाशित शोधकार्य संज्ञान में नहीं आ पाया है। जबकि कहानीकार जयनंदन की कहानियों को लेकर तीन शोघकार्य किए गए हैं-

- शोधार्थी आशुतोष झा, 'कथाकार जयनंदन का कथा वैशिट्य', राँची विश्वविद्यालय, जमशेदपुर, 2012
- शोधार्थी कुंज बिहारी विश्वकर्मा(अमृतांशु), 'जयनंदन का कथा साहित्य: समग्र मूल्यांकन', राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 2012
- शोधार्थी श्री दादासाहेब आनंदराव डवरी, 'जयनंदन के कहानी साहित्य में संवेदना का अनुशीलन', शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर(महाराष्ट्र), 2021

उपर्युक्त शोधकार्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि इसमें जयनंदन की कहानियों में व्यक्त नारी संबंधी, ग्राम संबंधी, मानव संबंधी संवेदनाओं के साथ-साथ उनकी कहानियों के शिल्प विधान पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, लेकिन जयनंदन की कहानियों में युवा-विमर्श को लेकर किसी स्वतंत्र बिंदु पर कोई शोधकार्य नहीं मिलता है।

शोध-अंतराल-

अभी तक इक्कीसवीं सदी की कहानियों में युवा विमर्श को लेकर कोई भी शोधकार्य संपन्न नहीं किया गया है जिसके कारण शोध-अंतराल की दृष्टि से प्रस्तावित शोध का नितांत अभाव है। प्रस्तावित भावी शोधकार्यों लिए मील का पत्थर साबित होगा और युवा-विमर्श के विभिन्न आयामों से भावी पीढ़ी को अवगत कराने में सक्षम होगा।

प्रस्तावित शोध विषय की प्रविधि-

प्रस्तावित शोध कार्य के अध्यायों की आवश्यकता के अनुसार आगमन प्रविधि का प्रयोग प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों के संकलन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण हेतु किया जाएगा। प्रस्तावित तथ्यों की व्याख्या तथा प्रमाणीकरण हेतु आवश्यकतानुसार विवेचनात्मक, तुलनात्मक आदि प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। निगमन प्रविधि के प्रयोग से प्राप्त निष्कर्षों का विवेचन किया जाएगा। वर्णनात्मक, विवरणात्मक तथा तथ्याख्यानपरक शोध प्रविधि आदि के माध्यम से परिकल्पनाओं की पुष्टि संबंधी तथ्यान्वेषण का कार्य संपन्न किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध के आधार ग्रंथ-

आधार ग्रंथ-

आलोच्य कहानी संग्रह-

- जयनंदन, 'कस्तूरी पहचानो, वत्स', आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2001
- जयनंदन, 'सूखते स्रोत', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2003
- जयनंदन, 'घर फूंक तमाशा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2004
- जयनंदन, 'दाल नहीं गलेगी अब', साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2005
- जयनंदन, 'गुहार', रेमाधव प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद, 2008
- जयनंदन, 'गाँव की सिसकियाँ', साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2012
- जयनंदन, 'भितरघात', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2013

- जयनंदन, सन्नाटा भंग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
- जयनंदन 'संकलित कहानियाँ', नेशनल बुक ट्रस्ट, 2015
- ऋषिकेश सुलभ, 'हलंत', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- ऋषिकेश सुलभ, 'वसंत के हत्यारे', राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2018
- ऋषिकेश सुलभ, 'तूती की आवाज', राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2019
- ऋषिकेश सुलभ, 'प्रतिनिधि कहानियाँ', राजकमल पैपरबैक्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2023

अन्य कहानी संग्रह-

- अंजु दुआ 'जैमिनी', 'सीली दीवार', अनुभव प्रकाशन, साहिबाबाद, 2007
- अंजु दुआ 'जैमिनी', 'क्या गुनाह किया', कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, 2007
- यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', 'वाह किन्नी वाह' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
- अनीता गोपेश, 'कित्ता पानी', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2009
- गोपालकृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी', 'मोम के रिश्ते', कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, 2011
- प्रेम भारद्वाज, 'इंतजार पाँचवें सपने का', सामयिक प्रकाशन, कानपुर, 2012
- प्रेम भारद्वाज, 'फोटो अंकल', राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2018
- गौरव सोलंकी 'ग्यारहवीं-'ए' के लड़के', राजकमल प्रकाशन, 2018
- सोनाली शिरपूरकर, 'कुछ कहानियाँ ऐसी भी', भाषाक रूब्रिक पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2019
- रवीन्द्र आरोही, 'जादू एक हँसी एक हीरोइन', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2022

प्रस्तावित शोध विषय की परिकल्पना-

प्रस्तावित शोध के दौरान शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित विषय के विभिन्न पक्षों का अनुमान लगाकर परिकल्पना के स्वरूप के आलोक में इक्कीसवीं सदी की कहानियों का अध्ययन किया जाएगा। प्रस्तावित शोध विषय की परिकल्पना निम्न प्रकार होगी-

प्रस्तावित शोध अध्यायों का विभाजन-

भूमिका

अध्याय- 1– इक्कीसवीं सदी की कहानी एवं कहानीकार

1.1 इक्कीसवीं सदी का प्रथम दशक

1.2 इक्कीसवीं सदी का द्वितीय दशक

1.3 इक्कीसवीं सदी के तृतीय दशक का पूर्वार्द्ध

अध्याय- 2– आलोच्य कहानीकारों का जीवन-वृत्त एवं रचनाधर्मिता

2.1 कहानीकार जयनंदन का जीवन-वृत्त एवं रचनाधर्मिता

2.2 कहानीकार ऋषिकेश सुलभ का जीवन-वृत्त एवं रचनाधर्मिता

अध्याय- 3– युवा-विमर्श की अवधारणा एवं स्वरूप

3.1 युवा-विमर्श की अवधारणा

3.2 युवा-विमर्श का स्वरूप

अध्याय- 4– इक्कीसवीं सदी की कहानियों में युवा-विमर्श

4.1 इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की कहानियों में युवा-विमर्श के विविध आयाम

4.2 इक्कीसवीं सदी के द्वितीय दशक की कहानियों में युवा-विमर्श के विविध आयाम

अध्याय-5– युवा विमर्श के आलोक में आलोच्य कहानीकारों की कहानियों का मूल्यांकन

5.1 जयनंदन की कहानियों में युवा-विमर्श का स्वरूप

5.2 ऋषिकेश सुलभ की कहानियों में युवा-विमर्श का स्वरूप

उपसंहार एवं निष्कर्ष

परिशिष्ट

शोध-संदर्भ-

(क) आधार ग्रंथ (ख) संदर्भ ग्रंथ (ग) कोश ग्रंथ (घ) शोध-ग्रंथ

(ङ) समाचार-पत्र (च) पत्रिकाएँ (छ) इण्टरनेट संदर्भ (ज) शब्दावली

प्रस्तावित संदर्भ ग्रंथों की सूची-

संदर्भ ग्रंथ-

- सुमन कृष्णकांत, 'इक्कीसवीं सदी की ओर', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
- डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, 'हिंदी कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन', नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र, 'इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य: समय, समाज और संवेदना', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
- डॉ. दिनेश पाठक 'शशि', 'इक्कीसवीं सदी की चुनिंदा दहेज कथाएँ', किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2010
- डॉ. शकुंतला चव्हाण, 'लोक साहित्य विमर्श', प्रशांत पब्लिकेशंस, 2011
- डॉ. राजेन्द्र मिश्र, 'भविष्य का साहित्य (21वीं सदी के साहित्य की अवधारणा), तक्षशिला प्रकाशन, 2011
- हिंदी कहानी और हंस, धनंजय कुमार दुबे, नेहा पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2012
- भरत प्रसाद, 'सृजन की 21वीं सदी', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2013
- संपादक- एच.के.दीवान, वेददान सुधीर, '21वीं सदी में भारत के सरोकार, सामयिक बुक्स, 2013
- संपादक- सुशील सिद्धार्थ, हिंदी कहानी का युवा परिदृश्य', सामयिक प्रकाशन, कानपुर, 2014
- संपादक-विनीत कुमार, 'हिंदी साहित्य के विविध विमर्श', वाङ्मय बुक्स, अलीगढ़, 2014
- डॉ. सविता, '21वीं सदी की महिलाएँ: सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक सरोकार', नीरज पब्लिशिंग हाउस, 2014
- डॉ. अमरसिंह बधान, '21वीं सदी का साहित्य और नारी विमर्श', अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली, 2015
- संपादक- डॉ. प्रतिज्ञा पतकी, डॉ. अनूप दळवी, '21वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित मानवीय संवेदना', नवभारत प्रकाशन, 2015
- रंजना चावड़ा, '21वीं सदी में हिंदी साहित्य: स्थिति एवं संभावनाएँ', राज पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2016

- सूरज पालीवाल, 'इक्कीसवीं सदी का पहला दशक और हिंदी कहानी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017
- डॉ. किरण तिवारी, 'साहित्यिक विमर्श के विविध प्रसंग', दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2017
- शिवकुमार राजौरिया, 'वृद्धावस्था विमर्श और हिंदी कहानी.', अद्वैत प्रकाशन नई दिल्ली, 2017
- ऋषभदेव शर्मा, 'कथाकारों की दुनिया', तक्षशिला प्रकाशन, 2017
- संजय चौहान, 'समकालीन हिंदी साहित्य: विचार और विमर्श', आशा बुक्स, 2018
- प्रभाकर सिंह, 'आधुनिक साहित्य विकास और विमर्श', प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता, 2018
- संपादक- डॉ. एस. वाय. होनगेकर, डॉ. आरिफ महात, सह संपादक- विश्वनाथ सुतार, '21वीं सदी का हिंदी साहित्य: नव विमर्श', 2018
- संपादक- डॉ. कामराज सिंधु (गुरु जी), '21वीं सदी में नारी-विमर्श: दशा और दिशा', संजय प्रकाशन, 2019
- डॉ. अनु पाण्डेय, '21 सदी का कथा साहित्य: विविध विमर्श; विकास प्रकाशन, 2019
- संजीव कुमार, 'हिंदी कहानी की इक्कीसवीं सदी पाठ के पास: पाठ से परे', राजकमल प्रकाशन, 2019
- रोहिणी रामचंद्र साळवे, 'कथाकार अल्पना मिश्र एवं 21वीं सदी की हिंदी कहानी', आर.के. पब्लिकेशन, मुंबई, 2019
- डॉ. रमेश कुमार, इक्कीसवीं सदी का कथा साहित्य', श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2019
- डॉ. नीता श्री. दौलतकर, '21वीं सदी के साहित्यिक विमर्श', विनय प्रकाशन, कानपुर, 2020
- डॉ. पूजा तिवारी, ज़िनित सबा, 'उत्तरशती के साहित्यिक विमर्श', नोशन प्रेस मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, चैन्नई, 2020
- वैभव सिंह, 'कहानी: विचारधारा और यथार्थ (21वीं सदी की चुनौतियाँ वं कथा-संवेदना)', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2020
- संपादन- अनंत विजय, '21 वीं सदी की 21 कहानियाँ', नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, दिल्ली, 2021
- संपादक- डॉ. संगीता, मनोज कुमार सिंह, 'हिंदी साहित्य नव विमर्श', विकास प्रकाशन, 2021

- संपादिका- डॉ. ऊषा कुमारी के.पी., ‘21वीं सदी के हिंदी साहित्य का समकालीन पक्ष’, 2021
- विजी. वी, ‘समकालीन हिंदी साहित्य-विमर्श के आयाम’, अनुज्ञ बुक्स, दिल्ली, 2021
- प्रो़ श्रीराम शर्मा, ‘समकालीन हिंदी साहित्य विविध विमर्श’, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2022
- संपादक- डॉ. राखी उपाध्याय, डॉ. अमित कुमार दुबे, शैक्षिक और साहित्यक विमर्श के विविध आयाम, जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, 2022
- डॉ. संतोष कांबले, पूनम शर्मा, ‘21वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित विविध विमर्श’, नोशन प्रेस, 2022
- संपादक- अजीत कुमार दास, ‘साहित्य में विमर्श के विविध आयाम’, आनंद प्रकाशन, 2022
- 21वीं सदी और हिंदी कहानी, संपादक-डॉ. पांडुरंग, ज्ञानेवा, चिलगर, सह संपादक-प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे, वान्या पब्लिकेशन्स, 2022
- संपादक- डॉ. लीना बी.एल., ‘समकालीन हिंदी साहित्य और नव-विमर्श, अनन्य प्रकाशन, 2022
- डॉ. गजल चोपड़ा, ‘समकालीन हिंदी साहित्य के विविध विमर्श’, सानिया पब्लिकेशन, 2022
- कृष्णदत्त पालीवाल, ‘आधुनिक हिंदी साहित्य सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श’, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, 2022
- संपादक- डॉ. नामदेव, ‘21वीं सदी की 21 श्रेष्ठ दलित कहानियाँ, डायमण्ड बुक्स, नई दिल्ली, 2023

शोध निर्देशक

डॉ० गजेन्द्र भारद्वाज
सहायक प्राचार्य, हिन्दी-विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

पवन जी झा
पिता– हरेराम झा
ग्राम– कविलपुर, पो०- लहेरियासराय
थाना- बहादुरपुर, जिला- दरभंगा।
पैट क्रमांक– E2209024

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

‘इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में युवा-विमर्श
(जयनंदन एवं ऋषिकेश सुलभ की कहानियों के विशेष संदर्भ में)’

शोध-विषय पर संक्षिप्त विवरण

आज के समाज में युवाओं की एक बहुत बड़ी आबादी नशे की लत, मोबाइल, इण्टरनेट तथा सोशल मीडिया की लत, पलायनवादिता, आत्महत्या, निराशा, कुंठा जैसी समस्याओं से जूझ रही है। जिनके प्रति शासन, समाज, संगठनों, प्रबुद्ध वर्गों तथा अध्येताओं का ध्यानाकर्षण करते हुए इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों ने युवा-विमर्श के उन आयामों तथा तत्त्वों के उन बिंदुओं का निरूपण कर दिया है जिनके व्यवस्थित वर्गीकरण, विश्लेषण तथा व्याख्यास से ‘युवा-विमर्श’ की अवधारणा को प्रकाश में लाया जा सकता है। 21वीं सदी की कई कहानियों में युवाओं की ये सभी समस्याएँ और संत्रास विभिन्न युवा पात्रों के माध्यम से प्रखर रूप में प्रकट होता हुआ देखा जा सकता है। इसी संदर्भ में जयनंदन की ‘भितरघात’ और ऋषिकेश सुलभ की ‘वसंत के हत्यारे’ जैसी कहानियों में युवा पात्रों के माध्यम से संस्कृति के अवमूल्यन, अपसंस्कृति, सांस्कृतिक अंतर्विरोध आदि का टकराव, उद्विग्नता, नैतिक मूल्यों में गिरावट जैसे प्रसंगों पर लेखन सामने आता है। प्रस्तावित शोध विषय में ‘युवा-विमर्श’ की अवधारणा एवं विभिन्न आयामों को खोजकर इक्कीसवीं सदी की कहानियों के इसका विस्तार ज्ञात करने का कार्य किया जाएगा।

शोध निर्देशक

डॉ० गजेन्द्र भारद्वाज
सहायक प्राचार्य, हिन्दी-विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

पवन जी झा
पिता– हरेराम झा
ग्राम– कविलपुर, पो०- लहेरियासराय
थाना- बहादुरपुर, जिला- दरभंगा।
पैट क्रमांक– E2209024